(14)

120

दलित कथा साहित्य में नारी के विभिन्न स्वरूप

डॉ0 मनु प्रताप
स.प्रो. हिन्दी
बरेली कॉलिज, बरेली

डॉ0 जीत सिंह
स.प्रो. हिन्दी
कु.मा.रा. महाविद्यालय,बादलपुर(गौ.बु. नगर)

उच्च वर्गीय नारी –

किसी भी समाज की प्रगति का मापदण्ड उस समाज द्वारा दी गयी स्त्रियों की पद मर्यादा है। उच्च वर्गीय समाज में स्त्रियाँ अधिक पढ़ी लिखी हैं, उन्हें पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का सुअवसर प्राप्त है। जहाँ इस सुअवसर का वे अपनी योग्यता और व्यवहार–कुशलता से लाभ उठाती है और जहाँ स्त्री की स्थिति एक गर्व की वस्तु है, वहीं देश और समाज प्रगतिशील समझा जाता है। कहा जाता है कि नारी शक्ति का महान भण्डार है और नारी का वास्तविक महत्व परिवार के सन्दर्भ में ही समझा जाता है – नारी परिवार की नींव है, परिवार समुदाय की नींव है और समुदाय राष्ट्र की। अतः नारी ही समाज व राष्ट्र की नौका की वास्तविक कर्णधार है उच्च वर्ग में स्त्रियों की स्थिति और पुरुषों की स्थिति उनके आदर्श और कार्यों का निर्धारण उच्च समाज की संस्कृति करती है। संस्कृति यह निश्चित करती है कि पारिवाग्कि और सामाजिक जीवन में स्त्रियों और पुरुषों का महत्व कितना है और उनके क्या–क्या कार्य है? ये महत्व और कार्य ही निश्चित करते हैं कि उच्चवर्गीय पुरुषों के बराबर होगा। अतः उच्चवर्गीय पुरुषों के समान ही स्त्रियों को ही भारतीय समाज में सम्मान प्राप्त है। लेकिन दलित समाज में सम्मान प्राप्त है। लेकिन दलित समाज की स्त्रियाँ आज भी उच्च वर्गीय नारी के यहाँ नौकरानी का कार्य करती है या वह किसी प्रकार से शोषित होती रहती है। इसका चित्रण दलित साहित्य में पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है।

Scanned by CamScanner